डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 4 अगस्त 2008 मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-चौथा | अगस्त-2008 | मासिक पत्रिका

3
सोच
(महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश)

9
हमारा राम
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

29
जीवनकाल
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
साँपला - हरियाणा

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया फोनः 9950 55 66 71

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोनः 9928 92 53 04

उप सम्पादिका : नंदिनी फोनः 94144 80 303

सहयोग : रेणु सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

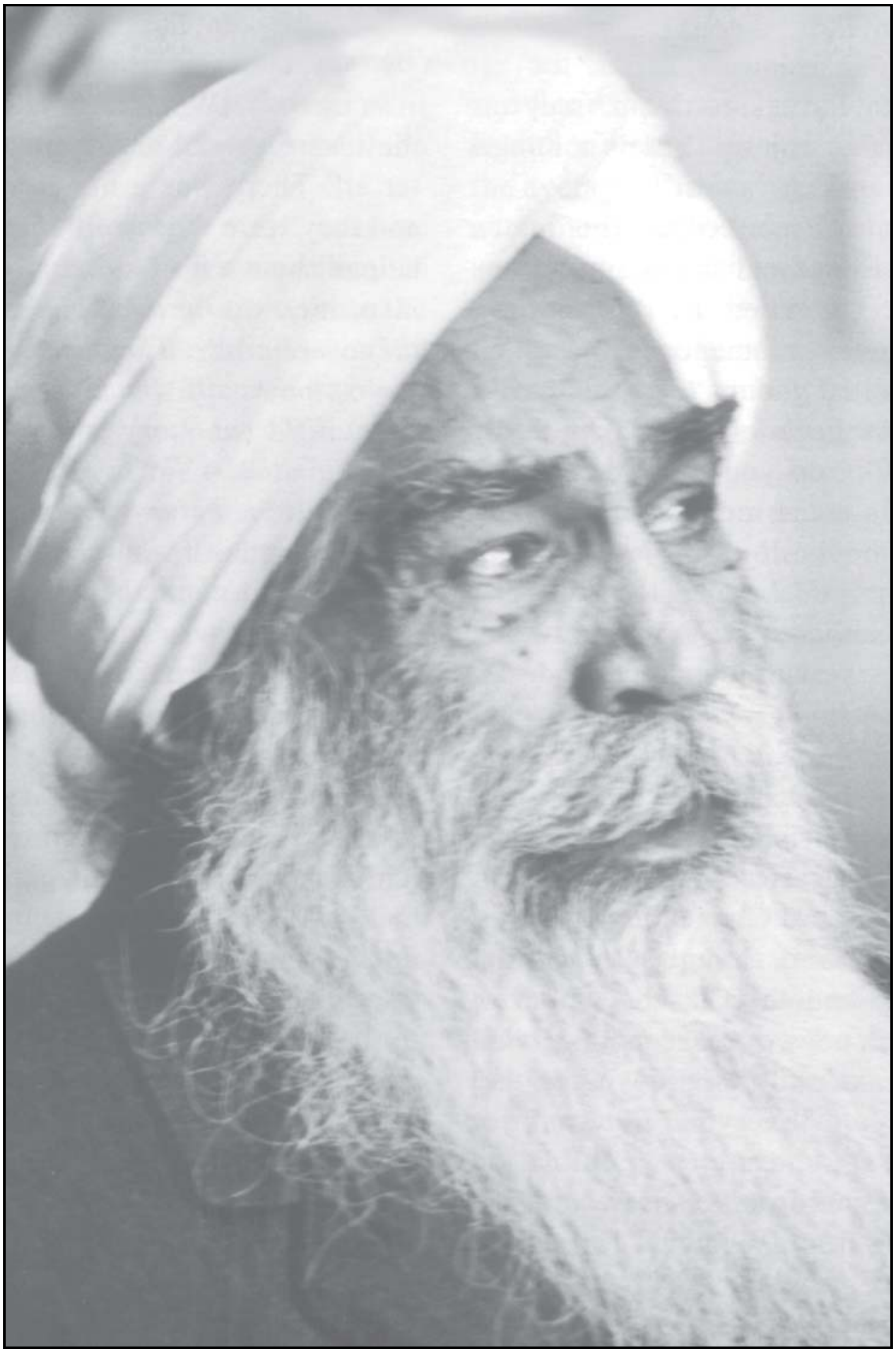

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

सोच

कभी किसी के लिए बुरा मत सोचें, बुरा सोचने से किसी को नुकसान हो सकता है। जब हम किसी के बारे में बुरा सोचते हैं तो उस तक वैसी ही **सोच** पहुँचती है जिस तरह तार पहुँचता है। आप किसी को अपनी सोच न भी बताएं तो भी उस तक वह **सोच** अनदेखी किरणों की तरह पहुँच जाएगी। हम जैसा सोचना चाहते हैं वैसा ही सोचते हैं; हमारी सोच अच्छी होनी चाहिए।

एक बार बादशाह अकबर को उसके मंत्री ने कहा कि हमें किसी के बारे में सोचने से पहले बहुत ध्यान देना चाहिए। अकबर ने मंत्री से पूछा कि तुम इस बारे में क्या जानते हो? मंत्री ने कहा कि चलिए हम बाहर चलते हैं। जब दोनों बाहर गए उन्होंने कुछ दूरी पर एक आदमी को अपनी तरफ आते हुए देखा। मंत्री ने बादशाह से कहा, ''आप उस आदमी के बारे में अपने मन में कुछ **सोचें** और जब वह आदमी आपके पास आए तो आप उससे पूछ सकते हैं कि उसके मन में आपके बारे में क्या विचार आया? आपने सिर्फ उसे देखना और उसके बारे में सोचना है?'' बादशाह ने अपने मन में सोचा कि इस आदमी को गोली से उड़ा देना चाहिए।

जब वह आदमी बादशाह के पास पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा, ''जब तुमने मुझे देखा तब तुम्हारे मन में क्या विचार आया?'' वह आदमी बोला, ''महाराज! मुझे माफ कर दीजिए, आपको देखकर मेरे मन में विचार आया कि मैं मुक्का मारकर आपका सिर तोड़ दूं।'' जब आप दूसरे के बारे में बुरा सोचते हैं तो उसके मन में भी वैसे ही विचार आएंगे। इसलिए हमें कुछ भी बोलने से पहले **सोच**

लेना चाहिए अगर हम किसी के बारे में बुरा **सोचें** या उससे कहें कि तुम बेवकूफ हो! अगर कोई हमारे साथ भी इस तरह का ही व्यवहार करे तो आपस में झगड़ा ही होगा।

जो इंसान के मन में होता है वह वही बोलता है। बुरे विचार शब्दों का रूप ले लेते हैं। शब्दों की जड़ ही बुरे विचार हैं फिर उन्हीं शब्दों की वजह से लड़ाई-झगड़ा होता है इसलिए किसी की भावनाओं को शब्दों, विचारों और कर्मों से ठेस न पहुँचाए। चाहे किसी तीर्थ स्थान पर दर्जनों आदमी इकट्ठे काम कर रहे हों अगर वे एक-दूसरे के बारे में बुरा सोचना शुरू कर दें तो इसका असर सामने वालों पर अनदेखी किरणों द्वारा पहुँच जाएगा और उनके मन में भी बुरे ख्याल आएंगे।

हमारा शरीर परमात्मा का मंदिर है और मन परमात्मा का सिंहासन है अगर हम परमात्मा के सिंहासन को मैला कर देंगे तो परमात्मा उस पर कैसे बैठेगा? जिनका मन साफ है वह परमात्मा की दया से परमात्मा को देख सकते हैं। मन को साफ करने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम किसी का बुरा न **सोचें**, किसी को बुरा न कहें और किसी का बुरा न करें।

अगर आश्रम में भी कोई आदमी किसी के लिए बुरा सोचता है तो उसकी **सोच** उस आदमी तक पहुँच जाती है। यह प्लेग की बीमारी की तरह है। जैसे प्लेग से पीड़ित चूहा जहाँ भी जाता है वह वहाँ प्लेग की बीमारी फैला देता है।

हमें परमात्मा के कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए अगर हम अपने मन में दूसरों के लिए अच्छे विचार लाते हैं तो उनके मन में भी हमारे लिए अच्छे विचार आएंगे। दूसरे लोगों के बारे में बुरा सोचकर हम परमात्मा के मंदिर रूपी शरीर को मैला

कर रहे हैं। हम बाहर से साफ-सुथरे नजर आते हैं लेकिन हमारा मन मैला है क्योंकि हम दूसरों के बारे में बुरा सोचकर अपने मन को मैला कर रहे हैं। हम सभी एक ही मशीन के अलग-अलग पुर्जे हैं अगर मशीन का एक भी पुर्जा खराब हो जाए तो वह काम करना बंद कर देती है। हमें अपने आपको सुधारना चाहिए।

आप जब भी किसी के बारे में **सोचें** तो अच्छा ही सोचें क्योंकि परमात्मा के रिश्ते से हम सब भाई-बहन हैं। परमात्मा सबके मन में है, हमारा शरीर परमात्मा का मंदिर है अगर हम किसी के बारे में बुरा सोचेंगे तो हम अपने मंदिर को मैला कर रहे होंगे। गुरु साहब अपने एक शब्द में प्रार्थना करते हुए कहते हैंः

सुखी बसे मेरो परिवारा, सेवक सिख सभे करतारा।

ऐसा तभी हो सकता है जब हम किसी के बारे में बुरा सोचना और किसी को बुरा कहना छोड़ दें अगर हमें किसी के बारे में कुछ पता चलता है तो उस बात को अपने तक ही रखें। हमें दूसरों को सुधारने की जरूरत नहीं, हमने पहले खुद को सुधारना है अगर हमें किसी के ऊपर दया आती है तो उसे चुपके से जाकर बता देना चाहिए कि वह कहाँ गलती कर रहा है?

अगर हम किसी अन्धे इंसान को अंधा कहें तो यह बात उसके दिल को ठेस पहुँचाएगी। हमें चाहिए कि उससे प्यार से पूछें कि तुम्हारी आँखों की रोशनी कैसे चली गई तो उसे बुरा नहीं लगेगा। मन के विचारों को प्रकट करने के बहुत से तरीके होते हैं। बात करना भी एक कला है।

परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल है, परमात्मा इंसान की तलाश में रहता है।

जब मैं पहले टूर पर लंदन गया वहाँ मैं दो बच्चों से मिला। जिनकी उम्र सात-आठ साल होगी। उन्हें 'शब्द-धुन' दी गई। मैंने उन बच्चों से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए? वे बोले कि हम सन्त बनना चाहते हैं। मैंने कहा, ''तुम्हें सन्तमत के रास्ते पर डाल दिया गया है। अच्छे इंसान बनो, तरक्की करो हो सकता है कि तुम्हें सन्त बनने के लिए चुन लिया जाए।''

परमात्मा हमेशा सच्चे इंसान की तलाश में रहता है ताकि परमात्मा का काम चलता रहे। परमात्मा ने अपने काम के मुताबिक इंसान को चुनना है। इसके लिए हमें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रार्थना या प्रचार करने से हमें वह स्थान नहीं मिल सकता। यह इंसान के हाथ में है ही नहीं। आखिर एक दिन हर किसी को पूर्ण बनना है। हर सन्त का बीता हुआ कल है। हर पापी का भविष्य तभी अच्छा हो सकता है जब वह किसी के लिए बुरा सोचना और बुरा करना छोड़ दे।

सन्त हमें सिखाते हैं कि हमें खुद को देखना है कि हम कहाँ खड़े हैं? हमारा दिल और दिमाग साफ होना चाहिए। हमें अपनी गलती के लिए माफी माँग लेनी चाहिए और दूसरों की गलती को माफ करके भूल जाना चाहिए। जब भी कोई आपको बुरा कहकर चोट पहुँचाए तो आप उसे माफ कर दें। माफी एक ऐसा अमृत है जो सारी गंदगी को दूर कर देता है। माफी बुरे विचारों को धो सकती है। माफ करके ही आप परमार्थ के रास्ते पर जा सकते हैं।

एक बार एक आदमी ने भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें बहुत भला-बुरा कहा। जब रात होने लगी और वह अपने घर वापिस जाने लगा तो भगवान बुद्ध ने उसे बुलाकर कहा, ''प्रिय दोस्त! अगर कोई किसी के लिए उपहार लाए और वह उस उपहार को स्वीकार न करे तो उस उपहार का क्या होगा?'' वह आदमी बोला, ''जो उपहार लाया था वह उसी के पास रह जाएगा।'' भगवान बुद्ध बोले, ''तुम मेरे लिए जो उपहार लाए थे मैंने उसे स्वीकार नहीं किया।''

हमें अपने अंदर अच्छे विचार लाने चाहिए। ऐसा करने से हमारी **सोच** बदल जाएगी। हमनें सिर्फ दिखावा ही नहीं करना बल्कि अपने जीवन में भी ढ़ालना है।

सन्त कहते हैं, ''जो लोग हमारे कहने के मुताबिक जीवन जीते हैं हम उनके सेवक हैं; हम हर तरह से उनकी सेवा करेंगे।'' पिता की बात मानने वाला बेटा पिता को प्यारा होता है। सन्तों को सब पता होता है वे बाहरी दिखावे पर नहीं जाते।

यह आपको दिल से दिल की बात करके समझाई गई है। सफल होने के लिए अपने मन को पवित्र रखें।

***

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हमारा राम

गुरु नानकदेव जी की बानी **16 पी. एस. आश्रम राजस्थान**

नहीं लभना मानस जन्म बहार, मुड़के नहीं लभना (2)

1. *वैदा करके भुल गया चेता,*
   मुश्किल हो गया देना लेखा (2)
   विसर गया करतार,
   मुड़के नहीं लभना......
2. *गुरु चरणा विच प्रीत लगा लै,*
   जन्म मरण दी रीत मुकालै, (2)
   रहेंदा क्यों फरार,
   मुड़के नहीं लभना......
3. *अखियां खोलके देख नजारा,*
   अंदर बैठा मालिक प्यारा, (2)
   उठके होश संभाल,
   मुड़के नहीं लभना......
4. *बीतिया वेला हथ ना आवे,*
   अजायब नूं कृपाल सुनावे, (2)
   चढ़ बेड़े हो जा पार,
   मुड़के नहीं लभना......

हम अपने गुरुदेव महाराज सावन-कृपाल के अति धन्यवादी हैं जिन्होंने हमारे लिए शान्ति का देश छोड़कर इंसानी जामा, बीमारियों का चोला धारण किया। गुरु गोविंद सिंह जी अपनी हिस्ट्री में लिखते हैं कि सतपुरुष परमात्मा ने मुझसे कहा, ''दुनिया अपनी-अपनी राह पर चल रही है। मेरे साथ जोड़ने वाले बहुत कम हैं। तू संसार में जाकर आत्माओं को मेरे साथ जोड़।'' आप कहते हैं कि मेरा दिल इस दुनिया में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका, मेरी सुरत परमात्मा के चरणों में ही लगी रही।

मालिक के प्यारे संसार में आकर इस तरह रहते हैं जिस तरह लड़की मायके घर में रहते हुए भी अपने पति की याद बनाकर रखती है। मालिक के प्यारे हमारी तरह कर्मों की कैद में नहीं होते। उनका इस संसार में आने का अपना कोई मिशन नहीं होता, वे परमात्मा के कहने पर इस दुःखी संसार में आकर रहते हैं।

अगर कोई एक बार स्वर्ग की सैर कर ले! फिर वह कल्लरों में मिट्टी उड़ाने के लिए कभी तैयार नहीं होगा। जिसका एक बार प्यारे प्रीतम के साथ मिलाप हो जाए वह बिछोड़े को गले नहीं लगाएगा। जिसे अमृत पीने को मिले वह जहर नहीं खाएगा। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

ज्यों जल विच जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल ज्योत समाना।

सन्त-महात्मा परमात्मा में इस तरह समाए होते हैं जैसे पानी-पानी में मिलकर एक हो जाता है। जिस तरह दो दीपक एक साथ रख दें तो यह नहीं पहचान सकते कि यह प्रकाश किस दीपक का है? इसी तरह मालिक और मालिक के बच्चे भी एक हो जाते हैं।

जब रहम का समुद्र हमारे ऊपर दया करता है तो वह अपने प्यारे बच्चों को संसार में भेजता है। वे आकर हमें प्यार का सबक सिखाते हैं। वे कहते हैं, ''प्यारेयो! आज तक किसी ने शराबों-कबाबों, विषय-विकारों और अपराधों से सुख-शान्ति नहीं ली और न ले ही सकता है। हम आग के ऊपर जितनी ज्यादा लकड़ियां डालेंगे आग उतनी ज्यादा ही भड़केगी। आखिर शरीर विषय-विकार भोग-भोगकर थक जाता है।''

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि सच्चा सुख, सच्ची शान्ति अपने घर पहुँचकर ही है। हमारा घर सच्चखंड और हमारी कौम सतनाम है। हम यहाँ चार दिनों के लिए देह के बंधन में बैठे हैं और अपने आपको हिन्दु, मुसलमान, सिख या ईसाई समझते हैं। परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल नहीं लगाया।

एक बार अकबर ने बीरबल से सवाल किया, ''कोई अपने आपको हिन्दु कोई अपने आपको मुसलमान, कोई अपने आपको सिख या

इसाई क्यों समझता हैं?'' बीरबल ने कहा कि इंसान के ऊपर उसके पालन-पोषण करने वालों का प्रभाव पड़ता है लेकिन अकबर इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हुआ। बीरबल ने अकबर से कहा कि मुझे कुछ समय की मोहलत चाहिए।

बीरबल ने कुछ दूध पीते बच्चों को ले लिया। एक जंगल में मकान बनवाकर उन बच्चों की परवरिश के लिए गूंगी दाईयाँ लगा दी। जैसे-जैसे बच्चों को परवरिश मिलती गई वे वैसी ही बोली सीखते गए। बारह साल बाद उन बच्चों को दरबार में पेश किया गया; वे बच्चे वैसे ही करने लगे जैसे गूंगे करते हैं।

अगर हिन्दुओं के बच्चे का पालन-पोषण मुसलमान परिवार में हो तो वह मुसलमानों वाले रीति-रिवाज करने लग जाएगा। उस बच्चे को समझाएं कि तू हिन्दुओं का बच्चा है तो वह मानने के लिए तैयार नहीं होगा। परमात्मा ने हम पर हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई का लेबल नहीं लगाया। ये चिह्न तो हम संसार में आकर ही धारण करते हैं।

सन्त-महात्मा संसार में आकर किसी की कौम, मजहब नहीं तोड़ते। वे कहते हैं कि आप अपनी-अपनी कौमों, समाजों में रहें। आपके कौम, मजहब आपको मुबारक हों। मसला तो 'नाम' के साथ जुड़ने का है। हम 'नाम' के साथ खुद नहीं जुड़ सकते। दुनिया का कोई भी काम सीखना हो तो उस्ताद की जरूरत पड़ती है अगर जमींदारा सीखना हो तो जमींदार की सोहबत में जाना पड़ता है। लोहे का काम सीखने के लिए लुहार की सोहबत में, लकड़ी का काम सीखने के लिए तरखान की सोहबत में और डाक्टरी सीखने के लिए डाक्टर की सोहबत में जाना पड़ता है। जब हम दुनियावी काम भी उस्तादों के बिना नहीं सीख सकते तो परमार्थ का रास्ता अपने आप किस तरह प्राप्त कर सकते हैं?

इसी तरह जब हमें अपनी देह का ही ज्ञान नहीं कि मुँह में रोटी डालते हैं वह गले से नीचे कहाँ चली जाती है तो परमात्मा का ज्ञान किस तरह हो सकता है? पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है। पहलवान ही

पहलवानी सिखा सकता है। परमात्मा की भक्ति ही अमोलक और सच्चा धन है, जो आपके साथ जाएगा। परमात्मा की भक्ति अमृत की तरह है; यह सच्चा सुख और सच्ची इज्जत की दाता है और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की नाशक है। हम इस धन को सन्त-महात्माओं की सोहबत-संगत में जाकर ही प्राप्त कर सकते हैं।

मालिक के प्यारे मालिक से बढ़कर होते हैं अगर वे संसार में न आते तो हम परमात्मा की भक्ति कर ही नहीं सकते थे क्योंकि हम अपने ख्यालों के मुताबिक भक्ति करने में लगे हुए हैं। राम! राम! कहने वाला अपने आपको हिन्दु, वाहे गुरु! वाहे गुरु! कहने वाला अपने आपको सिख, अल्लाह! अल्लाह! कहने वाला अपने आपको मुसलमान और गॉड! गॉड! कहने वाला अपने आपको इसाई समझता है। हम इन लफ्जों की हिस्ट्री से जान सकते हैं कि ये लफ्ज़ कितने पुराने हैं।

रामचन्द्र जी त्रेता युग में आए उनके जाने के बाद हम उन्हें राम! राम! कहने लगे। गुरु नानकदेव जी को आए हुए पाँच सौ साल हो गए उनके जाने के बाद हम उन्हें वाहे गुरु! वाहे गुरु! कहने लगे। मौहम्मद साहब को आए हुए चौदह सौ साल हो गए उनके जाने के बाद हम उन्हें अल्लाह! अल्लाह! कहने लगे। ईसा को आए हुए दो हजार साल हो गए उनके जाने के बाद हम उन्हें गॉड! गॉड! कहने लगे। इंसान न पाँच सौ साल पुराना है और न दो हजार साल पुराना है। इंसान उतना ही पुराना है जितना परमात्मा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कई जन्म भए कीट पतंगा, कई जन्म गज मीन कुरंगा।

परमात्मा से बिछड़कर हम अपने कर्मों के मुताबिक चौरासी लाख योनियों में कभी घोड़ा, कभी गधा, कभी कीड़ा-पतंगा और कभी पहाड़ बनें अगर हम अपने आप परमात्मा से मिल लेते तो हम उससे बिछड़कर दर-दर क्यों भटकते फिरते? आप महात्माओं की बानियाँ पढ़कर देखें! उन्होंने प्रभु के नाम की आवाज का खुले दिल से होका दिया है। 'नाम' प्रभु की आवाज है। 'नाम' लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता

अगर 'नाम' किसी भाषा का लफ्ज होता तो आज के महात्मा इसे लिख जाते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुप्ते नाम वरते विच कलयुग, घट घट हर भरपूर रहया।

परमात्मा ने गुप्त 'नाम' की डोरी हर जीव के अंदर रखी है। हम उसी के सहारे संसार में शोभा प्राप्त करते हैं, उसी के सहारे हमारी आँखे खुलती हैं और हम चलते-फिरते हैं। जब परमात्मा उस डोरी को निकाल लेता है तो यह शरीर मुर्दा हो जाता है फिर कोई हमारी कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। सन्त-महात्मा उस डोरी को असली जौहर कहते हैं। सारे समाज कहते हैं कि मुक्ति 'नाम' में है लेकिन उन्होंने कभी यह समझने की कोशिश नहीं की कि 'नाम' क्या चीज है?

गुरु अमरदेव जी महाराज नाम-रूप महात्मा को ढूंढ़ने के लिए बाईस बार गंगा पर गए। उन दिनों यात्रा करनी बहुत ही मुश्किल थी। आज की तरह ट्रेनें और बसें नहीं थी लोग पैदल ही यात्रा करते थे। आपने बारह साल गुरु के दर पर जाकर पानी ढ़ोया, कड़ी मेहनत की।

दुनिया में काल और दयाल दो ताकते हैं। रामचन्द्र जी ने लड़ाई में राक्षसों को मारा। **हमारा राम** हर एक घट के अंदर है। यह राम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मारता है। काम के वश होकर इंसान इतनी बुरी हरकतें करता है, अपना रिश्ता तक भूल जाता है उसे नज़दीक खड़ा हुआ इंसान भी दिखाई नहीं देता। क्रोध के वश होकर आदमी कत्ल कर देता है; इंसान को गाजर-मूली बना देता है। यही हालत लोभ, मोह और अहंकार की है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि **हमारा राम** इन राक्षसों को मारता है, यह घट-घट में रमा हुआ है। राम! राम! कहने से हम अपने आप इसके साथ नहीं जुड़ सकते। कबीर साहब कहते हैं:

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सगल पसारा, एक राम इन्हूं से न्यारा॥

जग में चार राम हैं। एक राम दशरथ का बेटा था जिसने हिन्दुस्तान में अच्छा राज्य किया उस राम को लोग आज भी याद करते हैं। दूसरा राम मन है जो अभी यहाँ बैठा है इसने कभी अमेरिका तो कभी अफ्रीका चले जाना है। तीसरा राम ब्रह्म है। चौथा राम सन्तों का परमात्मा है जो सच्चखंड में बैठा है, वह सबसे न्यारा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

राम राम सबको कहे, कहया राम न होय।
गुरु प्रशादी राम मन बसे, तां फल पावे कोए॥

आप कहते हैं कि तोता भी राम! राम! करता है अगर राम! राम! कहने से राम मिलता होता तो अब तक हम सबको मिल गया होता। आप किसी महात्मा के पास जाएं वह आपको रमत-राम के साथ जोड़ेगा। जो शब्द सच्चखंड से उठकर खंडो-ब्रह्मांडो को ताकत दे रहा है वह हमारे माथे के पीछे है। वहाँ हिन्दु-मुसलमान, औरत-मर्द का फर्क नहीं। महाराज सावन कहा करते थे, ''पाँच साल के बच्चे से लेकर सौ साल के बूढ़े तक इस 'नाम' को जपकर अपना जीवन सफल बना सकते हैं।'' आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है:

असुर संघारण राम हमारा।। घट घट रमईआ राम प्यारा॥

आप कहते हैं, ''**हमारा राम** घट-घट में रमा हुआ है। वह सोते-जागते हमारी हर हरकत को देख रहा है अगर हम यह सोचें कि **हमारा राम** हर जगह देख रहा है तो क्या हम कोई बुराई कर लेंगे? हम तो उस राम का डर दस साल के बच्चे जितना भी नहीं समझते?''

युसुफ के कई भाई थे। यूसुफ खूबसूरत और होनहार लड़का था। उसके भाईयों ने सोचा! अगर यह हमारे साथ रहेगा तो हमारी इज्जत नहीं होगी। उन्होंने युसुफ को बाहर ले जाकर कुएं में फेंक दिया। मिश्र के सौदागर वहाँ से गुजर रहे थे उन्होंने देखा कि कुएं में से इंसान की आवाज आ रही है उन्होंने युसुफ को कुएं में से निकाल लिया और उसे मिश्र के बादशाह के पास जाकर बेच दिया। युसुफ बादशाह के महलों में गुलाम बनकर जिंदगी बिताने लगा।

बादशाह की पत्नी का नाम जूलेखां था। एक दिन जूलेखां का ख्याल कायम नहीं रहा। वह युसूफ को कमरे के अंदर ले गई, अंदर ले जाकर उसने युसुफ को अपना खोटा ख्याल बताया। युसुफ सोचने लगा अगर मैं इंकार करता हूँ तो यह मुझ पर तोहमत लगवाकर मुझे मरवा देगी अगर मैं इसके खोटे ख्याल की इच्छा पूरी करता हूँ तो मैं अपने धर्म से गिर जाऊंगा। वह अभी सोच ही रहा था कि क्या करूं? इतने में जूलेखां ने पत्थर की मूर्ति पर एक कपड़ा डाल दिया और युसुफ से कहा, ''हम खोटा कर्म करने जा रहे है, यह हमारा ईष्ट है देख लेगा।'' युसूफ ने कहा, ''तूने तो अपने राम को ढ़क दिया लेकिन **मेरा राम** सोते-जागते हर समय हर हरकत को देखता है।''

नाले अलख न लखीऐ मूले गुरमुख लिख वीचारा हे।।

दुनिया उसे अलख!अलख! करके छोड़ देती है। गुरुमुख शब्द-नाम की कमाई करके उस अलख को लख लेते हैं, उसमे मिल जाते हैं।

गुरुमुख साधु सरण तुमारी।। कर किरपा प्रभ पार उतारी॥

प्यारेयो! भूखा रोटी की और प्यासा पानी की कद्र करता है। जो साधुओं से मिल चुके हैं वही साधुओं की कद्र करते हैं। गुरु नानकदेव जी परमात्मा के आगे अरदास करते हैं, ''हे परमात्मा! हम तेरे साधुओं की शरण में आए हैं, तू हम पर मेहर कर ताकि हमारी लिव यहीं लगी रहे और तू हमें पार कर दे।''

अगन पाणी सागर अति गहरा गुर सतगुर पार उतारा हे॥

कत्ल करने वाला तब तक भयभीत नहीं होता जब तक उसे पुलिस नजर नहीं आती। जब उसे पुलिस वाले नजर आ जाते हैं वह सब कुछ बता देता है। हम अपने आप पर मेहर करें इस कीमती इंसानी जामें को खराब न करें यह दोबारा नहीं मिलेगा।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि आगे आग और पानी का गहरा समुद्र है। हमें उसकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई का पता नहीं है।

आग का समुद्र नर्कों को और पानी का समुद्र इस दुनिया को कहा गया है। हम इस दुनिया में भी चैन से नहीं रहते। किसी को बेटी का तो किसी को बेटे का दुःख है। जिसका बेटा नहीं वह बेटे के लिए तड़फता फिरता है। जिसकी औलाद बात नहीं मानती वह बूढ़ा तड़फता फिरता है। किसी के पास पैसे नहीं वह सड़कों पर माँगता फिरता है। किसी के पास ज्यादा धन है तो वह डरा हुआ है।

नर्कों के समुद्र में मलीन जीव गोते खाते हैं जिसकी मियाद का भी पता नहीं कि आत्मा को गोते खाते हुए करोड़ो साल हो गए हैं। हम साधुओं की शरण में गए क्योंकि पूरा गुरु ही जहाज का काम करता है वही हमें पार उतारेगा।

मनमुख अंधले सोझी नाहीं।। आवह् जाहे मरह् मर जाही।।

हम मनमुख, मुग्ध, मूढ़ और गँवार हैं। हमें न अपना पता है और न ही हम महात्मा की बानी को सोच-समझकर पढ़ते हैं। हमें न यहाँ की समझ है न आगे की समझ है। कभी सोचा! हम इस दुनिया में मेहमान की तरह आए हैं हमने यहाँ सदा नहीं रहना। जब बचपन नहीं रहा तो जवानी और बुढ़ापा कैसे रहेंगे? एक दिन मौत की घंटी बज जाएगी। आगे कौन से माता-पिता हैं जहाँ जाकर हम रात बिताएंगे?

अगर हमने किसी रिश्तेदारी में जाना हो तो हम पहले सोचते हैं कि गाड़ी कब जाएगी, कितना किराया लगेगा, रात किस होटल या सराय में काटेंगे, क्या वहाँ हमारा कोई जान-पहचान वाला है? जिस दुनिया में यहाँ का धन-दौलत, बेटे-बेटियाँ साथ नहीं जाएंगे हमने वहाँ के लिए क्या इंतजाम किया? महात्मा प्यार से कहते हैं, ''मनमुख को समझ ही नहीं कि मैंने क्या करना है? हम यहाँ अंधों की तरह हाथ मारते जा रहे हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैंः

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या क्या करूं बखान।
जो साधन थे पिछले युग के, सो कलयुग में किए प्रमाण।।

हम कलयुग में रह रहे हैं। कलयुग में भी पिछले युगों के साधन लागू कर दिए हैं। मुक्ति 'नाम' में है लेकिन भूले-भटके भी हमारा ख्याल 'नाम' की तरफ नहीं आता क्योंकि हमें विषय-विकारों की जहर चढ़ी हुई है। यह जहर हमें इस तरफ आने ही नहीं देती।

पूरब लिखया लेख न मिटई जम दर अंध खुआरा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जीव किसके भाग्य लाए अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों तभी हम महात्मा की सोहबत में आते हैं। इससे भी ऊँचे भाग्य हों तभी हमें महात्मा की बानी और उनकी बातें समझ आती है कि ये हमें क्या समझा रहे हैं और हममें क्या कमी है? हमने पिछले जन्मों में पाप किए तो इस संसार में आना पड़ा। अब फिर दिन-रात पाप करने में लगे हुए हैं कभी तौबा नहीं करते। पूर्वले कर्मों से बंधे हुए, पापों के वश होकर हम इस तरफ नहीं आते।''

इक आवह् जावह् घर वास न पावह्।। किरत के बांधे पाप कमावह्।।

पशु-पक्षी हैं तब भी मौत-पैदाईश है अगर इंसान है तब भी मौत-पैदाईश है। हम जानते हैं कि मौत-पैदाईश का कितना दुःख होता है। जन्म के समय बच्चा एक माँस के लोथड़े की तरह होता है, वह अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उड़ा सकता। बच्चे को बीमारी कुछ और होती है दवाई कोई और दे दी जाती है। माता-पिता की बुद्धि काम नहीं करती। क्या ये सब सुख है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मुख तले पैर ऊपरे, वसन्दा कुहथड़े थाँव।
नानक सो धनी क्यों विसारया, उदरे जिसका नाँव।।

आप सोचकर देखें! परमात्मा ने आपको माता के पेट में ऐसी दुःखी जिंदगी में रखा जहाँ बहुत छोटी सी जगह पर आपका वास था। मुँह नीचे की तरफ और टाँगे ऊपर की तरफ थी। वहाँ यह जीव साँस-साँस के साथ सिमरन करता था कि हे परमात्मा! मैं तेरा नाम जपूंगा।

जब बच्चा जन्म लेता है घर के लोग खुशी मनाते हैं। बाजे-गाजे सुनता है तो सोचता है! ये खुशियाँ सदा ही रहेंगी। अंदर से ख्याल टूटकर बाहर दुनिया में लग जाता है। एक दिन मौत आँखों के सामने आ जाती है फिर धर्मराज के पास जाना पड़ता है। धर्मराज हमारी ख्वाहिशों के मुताबिक फिर जन्म दे देता है। हमें दस नंबरियों की तरह हथकड़ियां लगी रहती हैं। उस इंसान की क्या इज्जत है जिसकी रोज सरकार में पेशी होती है। ये जीव किसी जगह भी टिक कर नहीं रह सकते। आते हैं, जाते हैं, जन्मते हैं, मरते हैं।

अँधले सोझी बूझ न काई लोभ बुरा अहंकारा हे।।
पिर बिन क्या तिस धन सिंगारा।। पर पिर राती खसम विसारा।।

गुरु नानकदेव जी एक मिसाल देकर समझाते हैं कि हम रोज ही मनबुद्धि के साथ जो कर्मकांड करते हैं वे इस तरह हैं जैसे किसी औरत का पति परदेस गया हो और वह पीछे से हार-श्रृंगार करे तो पड़ोसी उसकी निन्दा करते हैं कि इसका पति तो परदेस में है; यह हार-श्रृंगार करके किसको दिखाती है? इसका चाल-चलन ठीक नहीं।

परमात्मा सच्चखंड में बैठा है। हम यहाँ दिन-रात कर्मकांड करने में लगे हुए हैं। कोई जप-तप करता है; कोई तीर्थों पर फिरता है। इन सब कर्मकांडो के बारे में गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पिर परदेश श्रृंगार बनाए, मनमुख अंध ऐसे कर्म कमाए।
हलत न शोभा पलत न ढोई, अहला जन्म गंवावणया।।

यही हालत हम मनमुखों की है। हम कहते हैं कि हमने परमात्मा को पा लिया है लेकिन महात्मा कहते हैं कि आप उस औरत की तरह श्रृंगार कर रहे हैं यह आपके किस काम का है?

ज्यों बेसुआ पूत बाप को कहीऐ त्यों फोकट कार विकारा हे।।

महात्मा बानी लिखते समय यह नहीं सोचते कि सन्तों की बात सुनकर दुनिया उनकी निन्दा करेगी। सन्तों का भाव होता है कि ये जीव

किसी न किसी तरह भ्रम से निकले और परमात्मा की तरफ आएं। हम लोग दिन-रात फोकट कर्म कर रहे हैं उनका परमात्मा के दरबार में कोई मूल्य नहीं। यह इस तरह है जैसे वेश्या का पुत्र किसे अपना बाप बनाएगा? वेश्या के पास तो अनेकों ही आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों निगुरा सिमरन करे, दिन में कई इक बार।
वेश्या सति होना चाहे, कौन करे परतार।।

हम मनबुद्धि से चाहे कुछ भी करें वह किसी भी लेखे में नहीं है।

प्रेत पिंजर मह् दूख घनेरे।। नरक पचह् अग्यान अंधेरे।।

प्यारेयो! अगर मशीनों से भक्ति करके परमात्मा मिल जाता तो सारी दुनिया ही मुक्त हो जाती। आजकल हिन्दु, मुसलमान अपने हृदय से विनती करके, हाथ-मुँह हिलाकर खुश नहीं होते। सोचते हैं कि किसी को दस रूपये देकर ठेके में मुक्ति मिल जाएगी अगर इस तरह मुक्ति मिलती होती तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? हम किसी से कहें कि भाई! तू पैसे लेकर हमारी विनती, अरदास या आरती कर दे तो इससे सस्ता सौदा और क्या है?

ये सब फोकट कर्म हैं। ये कर्म करते-करते हमें ऐसी-ऐसी योनियों में जाना पड़ता है जिन योनियों में जाकर हम कष्ट पाते हैं; सबसे मुश्किल योनि प्रेत की है।

धरमराय की बाकी लीजै जिन हर का नाम विसारा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जीव को नर्कों से निकालकर इंसान नहीं बनाया जाता। पहले इसे कीड़ो की योनि में फिर पक्षियों की योनि में आखिर बैल की योनि मिलती है। इंसानी जामें में आने के लिए बहुत समय लगता है।'' हमारे बचे हुए कर्मों का भुगतान करवाने के लिए धर्मराज हमें वैसी योनि में जन्म देता है।

कर्म तीन प्रकार के हैंः *क्रियमान कर्म* - ये वो कर्म हैं जो हम आज कर रहे हैं। *संचित कर्म* - ये वो कर्म हैं जो हम युगों-युगों से

करते आए हैं; इनका स्टॉक ब्रह्म में है। *प्रालब्ध कर्म* - ये वो कर्म हैं जो हम अब भोग रहे हैं।

जैसे जमींदार लोग सावणी फसल बीजते हैं और हाड़ी खाते हैं। फिर हाड़ी बीजते हैं और सावणी खाते हैं उसमें से जो थोड़ी बहुत बचत होती है वे पैसे महाजन के पास जमा करवा देते हैं। जब कभी अकाल पड़ता है तो उन पैसों से अपना अच्छा जीवन बसर कर लेते हैं। इसी तरह अगर हम एक जन्म में कर्म न भी करें तो भी जन्मों-जन्मों का जो स्टॉक ब्रह्म में है धर्मराज बाकी हिसाब लेकर फिर जन्म दे देता है।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं, ''प्यारेयो! क्रियमान कर्म सोचकर करें। प्रालब्ध कर्म आपने खुद ही किए हैं जो आपको ही भोगने पड़ेंगे; हँसकर भोगें चाहे रोकर भोगें। हम सतसंग सुनकर कुछ बुरी आदतें छोड़ देते हैं और कानों को हाथ लगा लेते हैं कि ये बुरी आदतें हैं।''

अगर कोई जेलखाने में जाकर नेक-पाक जीवन बिताता है तो सरकार उसे कुछ रियायत दे देती है अगर वह जेलखाने में जाकर भी हरकतें करता है तो उसकी कैद और बढ़ जाती है।

सर्व रोग दा औखद नाम।

अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो परमात्मा हम पर जरूर रहम करता है। धर्मराज खबर लेता है कि तुझे सारी योनियों का सरदार, इंसान बनाया। सरदार पर जिम्मेंवारियां भी ज्यादा होती हैं लेकिन तूने इंसान बनकर परमात्मा की भक्ति छोड़ दी, परमात्मा की तरफ आया ही नहीं।

सूरज तपै अगन बिख झाला।। अपत पसू मनमुख बेताला।।

यह गुरु नानकदेव जी की बानी है। आप जो कुछ देखते हैं वही बानी में लिख रहे हैं। आप कहते हैं, ''आगे आग का सूरज तपता है। वहाँ बारह सूरज का तेज है अगर उसकी एक चिंगारी भी दुनिया में आ जाए तो यह दुनिया सड़ जाए। जीव के सिर पर पाप-पुण्यों का बोझ है,

इससे चला नहीं जाता यमदूत डन्डे मारते हैं। वह रोता है वहाँ उसकी फरियाद कौन सुने? यह बेताला है, पशुओं की जिंदगी जी रहा है। न यह किसी की बात सुनता है न इसे कोई बात समझ आती है।''

करतूत पशु की मानस जात, लोक पचारा करे दिन-रात।

आप अंदर जाकर देखें! जो महात्मा अंदर जाते हैं यह उनका कहना है कि अंदर बहुत कुछ है। केशवराय ने कहा थाः

अकल वही हैवान की बिना सींग बिन पूँछ।।

ब्रह्मा ने गलती से सींग और पूँछ की जगह दाढ़ी-मूँछ लगा दी।

आसा मनसा कूड़ कमावह् रोग बुरा बुरयारा हे।।

मन आशा, तृष्णा पैदा करता है। हम अपनी प्लेनिंग करते हैं लेकिन पता नहीं कि परमात्मा ने हमारे लिए क्या प्लेनिंग की है? गुरु नानक साहब कहते हैंः

मता करे पश्चिम की ताईं, पूर्व ही ले जात।

हम सोचते हैं! यह काम कर लें फिर परमात्मा की भक्ति करेंगे। यही आज-कल करते-करते काल आ जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

कल करन्ता सो अब कर, अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवी, जे सिर पर आया काल।।

मस्तक भार कल्लर सिर भारा।। क्योंकर भवजल लंघस पारा।।
सतगुर बोहिथ आद जुगादि राम नाम निसतारा हे।।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए। वहाँ काजी रुक्मदीन ने आपसे बहुत से सवाल किए। आखिरी सवाल में उसने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''आप जीवित महापुरुष गुरु की बहुत तारीफ करते हैं कि जीवित महापुरुष के बिना उद्धार नहीं हो सकता। मुर्शिद या गुरु कहाँ मदद करता है?'' आपने कहा, ''भाई रुक्मदीन! आपकी पवित्र किताब कुरान

में भी जिक्र आता है कि एक भयानक नदी है जिसमें से आत्मा को गुजरना पड़ता है। जिस आत्मा का कोई मुर्शिद या गुरु नहीं उसे उस नदी में गोते दिए जाते हैं।''

बे पीरा बे मुर्शिदा, कोई न पूछे बात।

हिन्दु शास्त्रों में इसे बेतरणी नदी कहकर बयान किया गया है। जिसका कोई गुरु-पीर नहीं वहाँ उसकी बात कौन पूछता है?

कबीरा गागर जल भरी, आजकाल जाए है फूट।
गुरु बिन चेतया आपणा, से आध माझ जाएंगे लूट।।

यह देह मिट्टी की गागर है पता नहीं इसने कब फूट जाना है! सारी जिंदगी में जो कमाया था वह यहीं रह गया, साथ सिर्फ पाप और पुण्य गए। इसे धर्मराज के पास पहुँचना है, रास्ते में प्यास लगती है यम कहते हैं कि तू हमें अपना फलाना पुण्य दे हम तुझे तभी पानी पिलाएंगे। इसके पास जो कुछ होता है वह रास्ते में ही लुट जाता है।

हमारे राजस्थान के पुराने लोगों को पता है कि यहाँ भी पानी का एक टीन एक रुपये में बिकता रहा है।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''गुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता, 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं। आदि-जुगादि से ही गुरु जहाज का काम करता है। जिस तरह जहाज के कप्तान समुद्र की लहरों से पूरी तरह वाकिफ होते हैं, वे हमें हवा-पानी की लहरों से बचाकर ले जाते हैं।''

जब हम न्यूयार्क से वापिस हिन्दुस्तान आ रहे थे। यह समुद्र के ऊपर से 10-11 घंटे की उड़ान थी। उस समय हवा की लहरें चल रही थी, जहाज डोल रहा था। जहाज के कप्तान ने कहा कि सभी अपनी पेटी बाँधकर रखें। हम परमात्मा की दया से जहाज को सही सलामत ले जाएंगे। कप्तान को अपने कर्त्तव्य पर मान था। इसी तरह गुरु वाकिफकार होता है उसे अपने गुरु पर भरोसा होता है; वे अपने 'नाम' के बेड़े पर सब जीवों को बिठा लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

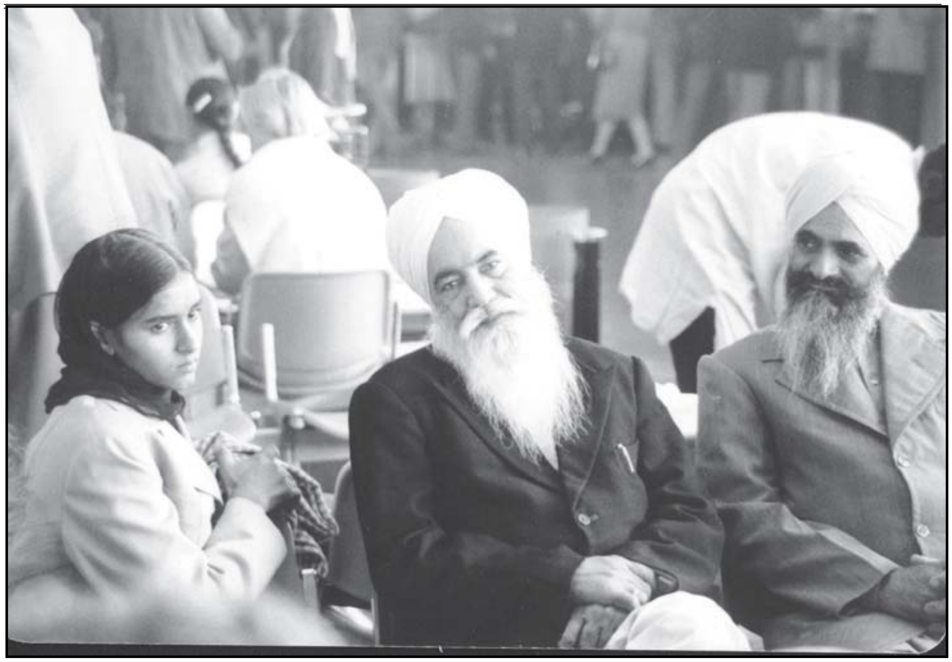

दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ाया बेड़े।
जे तिस भावे हुक्म मनावे, इस बेड़े को पार लघांवे।।

पुत्र कलत्र जग हेत प्यारा।। माया मोह पसरया पासारा।।

पुत्र, पौत्र, औरत सबके साथ प्यार है। यह सारा माया का पसारा है, हम इस पसारे में लगकर परमात्मा को भूल जाते हैं।

जम के फाहे सतगुर तोड़े गुरमुख तत बीचारा हे।।

आप कहते हैं कि गुरमुख यमों की जंजीरें जोड़ देते हैं। सन्तों की चेताई हुई आत्मा को काल अंगीकार ही नहीं करता। काल ने दयाल से यह वायदा लिया हुआ है कि सन्त संसार में आकर कोई करामात न दिखाएं। जीव को अपने पिछले जन्म का ज्ञान न हो और मैं जिसे जहाँ जन्म दूं वह वहाँ खुश रहे। सन्तों का एक ही वायदा है कि वे जिसे 'नाम' दें वह आत्मा काल के दायरे में न जाए अगर काल उस आत्मा को पकड़ता है तो सन्तों को आत्मा के पीछे जाना पड़ता है।

पिछले जमाने में कानून था अगर बादशाह जेल में जाता तो सारे कैदी रिहा किए जाते थे। इसी तरह सन्त नर्क में जाएं तो नर्कों के जीव शान्त हो जाते हैं, सबको मनुष्य जन्म मिलता है। गुरु नानकदेव जी अपने सेवक की खातिर नर्क में गए और नर्कों में अपना अंगूठा डुबोया। तुलसी साहब कहते हैंः

अब नानक की साख सुनाऊं, सोदर पौड़ी मैं समझाऊं।

गुरु नानकदेव जी अपने एक सेवक की खातिर नर्कों में गए और उसे नर्कों से छुड़वाकर लाए क्योंकि आपने उसे 'नाम' दिया था। क्या पुत्र, पौत्र, धन-दौलत उस समय हमारी मदद कर सकते हैं? सिर्फ सतगुरु ही उन हथकड़ियों को खुलवा सकता है। जिस तरह पुलिसवालों ने हथकड़ियां लगाई होती हैं अगर बादशाह कहे कि यह हथकड़ियां खोल दो तो पुलिसवालों को हथकड़ियां खोलनी पड़ती हैं।

सन्त संसार में आकर अपने प्यारों से कुछ छिपाकर नहीं रखते। जो कमाई करते हैं वे अंदर भी देखते हैं। महाराज सावन सिंह जी सतसंग में बताया करते थे कि आपकी चेताई हुई एक आत्मा नर्कों में चली गई। बाबा जयमल सिंह जी ने आपसे कहा, ''फलानी आत्मा नर्कों में चली गई है तू उसे ले आ।'' आपने कहा, ''मैं नर्कों में गया मैंने उस आत्मा से पूछा क्या तुझे सिमरन याद है?'' उस आत्मा ने कहा, ''नहीं।'' फिर मैंने पूछा कि गुरु स्वरूप आता है? उसने कहा नहीं। फिर मैंने पूछा क्या मेरी आवाज सुनाई देती है? उस आत्मा ने कहा, ''हाँ जी! आपकी आवाज सुनाई देती है।'' मैंने उससे कहा कि तू मेरी आवाज सुनकर चली आ। तब वह आत्मा कहने लगी कि सिमरन भी याद है। गुरु स्वरूप भी आता है।

सतगुरु ही इन जंजीरों को तोड़ता है लेकिन हम सतगुरु से प्यार नहीं करते सोचते हैं! हमें क्या जरूरत है?

कूड़ मुट्ठी चालै बहु राही।। मनमुख दाझै पड़ पड़ भाही।।

हम कूड़ कमाते हैं और कूड़ का ही रूप हो चुके हैं। हम पढ़-पढ़ाई पर जोर देते हैं लेकिन जो पढ़ते हैं उस पर विचार नहीं करते।

अमृत नाम गुरु वडदाणा नाम जपो सुख सारा हे।।

परमात्मा ने अमृत की दात गुरु के पास रखी है और गुरु को उस दात का भंडारी बनाया हुआ है। हमारी देह अमृत का चश्मा है यह आबे-हयात से भरी हुई है लेकिन हमारी आँखो के पीछे पर्दा लगाकर हमें बाहर निकाला हुआ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उस अमृत को पी रहे हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

घर ही में अमृत भरपूर है, मनमुखा साध ना पाया।
ज्यों कस्तूरी मृग न जाणें, ओह भ्रम दा भ्रम भरमाया।।

हमारे घर में बेशुमार अमृत है। जिस तरह मृग की नाभि में कस्तूरी है लेकिन भ्रम की वजह से वह उस कस्तूरी को झाड़ियों में ढूंढ़ता फिरता है। हमारी हालत भी मृग की तरह है। परमात्मा ने वह अमृत हमारे अंदर रखा हुआ है लेकिन हम उस अमृत की तलाश बाहर करते हैं। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैंः

नौं दर धावत नवें दर फीके।

आँखों के नीचे-नीचे इन्द्रियों के भोग हैं, शराबों-कबाबों की लज्जतें हैं; ये सब फीके रस हैं। आप अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर उस जगह पहुँचें जहाँ दाता अमृत बरसा रहा है।

सतगुर तुट्टा साच दृढ़ाए।। सभ दुख मेटे मारग पाए।।
कंडा पाए न गडई मूले जिस सतगुर राखणहारा हे।।

सन्त बहुत दयावान होते हैं। वे हमें ऐबों-पापों से हटने का उपदेश देते हैं। वे हमारी मुफ्त की चौंकीदारी करते हैं, सेवा करते हैं। जब हम सतसंग सुनते हैं, 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो हमारे अंदर से जन्म-जन्मांतरों की हौमें की बीमारी खत्म हो जाती है। हमारे और परमात्मा के बीच हौमें ही रुकावट है। गुरु साहब कहते हैंः

हौमें दीर्घ रोग है, दारु भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी, ते गुरु का शब्द कमाहे।।

जहाँ बीमारी है वहाँ दवाई भी है। परमात्मा जिन पर दया करता है उन्हें अपनी भक्ति, 'शब्द-नाम' की कमाई में लगा लेता है।

खेहू खेह रलै तन छीजै।। मनमुख पाथर सैल न भीजै।।

यह तन मिट्टी में पैदा हुआ है आखिर मिट्टी में ही समा जाएगा। हम मनमुख पत्थर की तरह है जिस तरह पत्थर को दिन-रात पानी में रखें फिर भी उसके अंदर पानी नहीं समाता। बेशक महात्माओं ने बड़े-बड़े ग्रन्थ, पोथियाँ, वेद-शास्त्र लिखे हैं जिन्हें हम पढ़ते और सुनते भी हैं लेकिन हमारी हालत उस पत्थर की तरह हो गई है। ***अंतर लगे न शीत।***

करण पलाव करे बहुतेरे नरक सुरग अवतारा हे।।

यह जीव बड़े-बड़े उपाय करता है लेकिन कभी नर्क में तो कभी स्वर्ग में जाता है। स्वर्गों में भी मौत, पैदाईश और ईर्ष्या है। जहाँ मौत-पैदाईश, मैं-मेरी और ईर्ष्या है वहाँ सुख कहाँ है?

माया बिख भुयंगम नाले।। इन दुविधा घर बहुते गाले।।

जहाँ अमृत है वहाँ जहर भी है। अब हमनें रास्ता चुनना है कि अमृत प्राप्त करना है या जहर प्राप्त करना है? विषय-विकार जहर हैं और 'नाम' अमृत है।

सतगुर बाझों प्रीत न उपजै भगति रत्ते पतीआरा हे।।
साकत माया कौ बहुत धावह्।। नाम विसार कहा सुख पावह्।।

साकत पुरुष दिन-रात माया के पदार्थों को इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। यह माया आज तक न तो किसी के पास रही है और न रह ही सकती है। हम जो पाप करते हैं हमें उनका लेखा जरूर देना पड़ता है।

त्रिहगुण अंतर खपह् खपावह् नाहीं पार उतारा हे।।

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण के कारण ही कभी स्वर्गों तो कभी नर्कों में गोते खाते हैं। कभी इंसान तो कभी हैवान हैं।

कूकर सूकर कहीऐ कूड़यारा।। भौंक मरह् भौं भौं भौंहारा।।

मनमुख साकत पुरुष कुत्ते की तरह हैं। जिस तरह कुत्ता भौंककर चला जाता है इसी तरह ये लोग आते हैं और चले जाते हैं।''

गुरु मंत्र हीनस जो प्राणी, दीर्घन्त जन्म भ्रष्टने।
कूकर शूकर गर्दभ, खल सर्प तुल हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि ये कुत्ते, सूअर, साँप, गधे जैसा है। इंसानी जामा अपने आपको समझने और परमात्मा की भक्ति करने के लिए मिला था लेकिन ये साकत पुरुषों की तरह जिंदगी बिताकर चले जाते हैं; न 'नाम' जपा और न 'नाम' की तरफ आए।

मन तन झूठे कूड़ कमावह् दुरमत दरगह हारा हे।।

हम मन के और तन के झूठे हैं। तन से बुराई करते-करते बूढ़े हो जाते हैं। हमने न कभी सिमरन किया और न शान्ति प्राप्त की। सारा दिन लोगों की निन्दा-चुगली करके अपना जीवन गंदा कर रहे हैं।

पंजे विषय भोगेन्दया उम्र गँवाई यार, ऐह मन न रजया हुण कद रजसी यार।।

सतगुर मिलै त मनुआं टेकै।। राम नाम दे सरण परेकै।।

हमारे ऊँचे भाग्य हों! दिल में शौक हो! अगर कोई महात्मा मिल जाए तब जाकर हमारा मन 'नाम' की कमाई में टिकता है।

हर धन नाम अमोलक देवै हर जस दरगह प्यारा हे।।

सतगुरु की दात खरीदी नहीं जा सकती यह अमोलक है।

नाम अमोलक रतन है, पूरे सतगुरु पास।
सतगुरु सेवा लगिए, कड रतन देवे प्रकाश।।

राम नाम साधु सरणाई।। सतगुर बचनी गत मित पाई।।

हम चाहे जितनी भी योनियों में चले जाएं! 'नाम' जब भी मिलेगा साधु-महात्माओं से ही मिलेगा। पानी में नहाने से गति नहीं होगी। गति 'नाम' की कमाई और गुरुमुखों की सोहबत-संगत से ही होगी। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

जिस वक्खर को लैंण तू आया, राम नाम सन्तन घर पाया।
तज अभिमान लेहो मन मोल, राम नाम हृदय में तोल।।

परमात्मा ने जिस मकसद के लिए इंसान का जामा दिया है। वह 'नाम' परमात्मा ने सन्तों के घर में रखा हुआ है। सन्त 'नाम' जपकर नाम-रूप हो जाते हैं। आप ऐसे ही अभिमान में न फिरें। 'नाम' प्राप्त करके 'नाम' की कमाई करें अपने जीवन को सफल करें।

नानक हर जप हर मन मेरे हर मेले मेलणहारा हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाया है कि राम सबके अंदर समाया हुआ है। हम जिसे अलख करके छोड़ देते हैं, गुरुमुख उसे लखा देते हैं। काल ने मलीन आत्माओं को दुख देने के लिए बहुत से तरीके बनाए हुए हैं। पापियों के लिए नर्क और पुन्नियों के लिए स्वर्ग बनाए हुए हैं। जीव न स्वर्गों में सुखी है न नर्कों में सुखी है। जहाँ इन्द्रियों के भोग हैं वहाँ सुख कैसे हो सकता है?

आप स्वर्ग के राजा इन्द्र की कहानियाँ सुनते हैं अगर उसे शान्ति होती तो वह मातलोक में गौतम ऋषि से श्राप क्यों लेता? देवता भी इंसानी जामें को लोचते हैं। देवता कहते हैं कि अगर अब परमात्मा मेहर करके हमें इंसानी जामा दे तो हम 'नाम' की कमाई करेंगे। कबीर साहब कहते हैं:

जिस देही को सिमरे देव, सा देही भज हर की सेव।
भजो गोविंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।।

गुरु नानकदेव जी ने हमें इस छोटे से शब्द में प्यार से समझाया कि 'नाम' की कमाई करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

☆☆☆

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

जीवनकाल

साँपला – हरियाणा

प्रश्न : सन्तजी! आप अक्सर कहा करते हैं कि सेवक को गुरु के शारीरिक रूप में रहते हुए ही गुरु को प्रकट कर लेना चाहिए और अंदर जाकर देख लेना चाहिए। आप इसकी महानता के बारे में हमें कुछ समझाएंगे?

उत्तर : सभी सन्तों ने यही कहा है, "जो काम कल करना है उसे आज और जो आज करना है उसे अभी कर लेना चाहिए। क्या पता सांस ऊपर गया है नीचे आए या न आए!"

प्यारेयो! गुरु गोविंद सिंह जी के समय से सिक्खों में एक निहंगो की कौम भी है। जिसे गुरु गोविंद सिंह जी की लाडली फौज भी कहते हैं। एक निहंग दातुन तोड़ने के लिए वर्दी और जूते पहने हुए पेड़ पर चढ़ गया। किसी ने उससे कहा, "भले आदमी! तू जूते तो नीचे उतार लेता।" उस निहंग ने कहा, "अगर गुरु ने मुझे ऊपर से ही बुला लिया तो क्या मैं जूते पहनने फिर नीचे आऊंगा?"

इसी तरह क्या मौत का फरिश्ता आकर हमसे पूछेगा कि तू पहले अपना यह काम कर ले मैं तुझे फिर ले जाऊंगा? हमें भी गुरु की आज्ञा का पालन करके उसके **जीवनकाल** में ही कामयाब हो जाना चाहिए। अच्छा बच्चा स्कूल का काम अध्यापक के सामने बैठकर ही कर लेता है कि कहीं घर जाकर आलस न आ जाए अगर कोई कमी-पेशी हुई तो अध्यापक से पूछ लेगा।

हम तीन लड़के स्कूल में पढ़ने लगे, उस समय उर्दू की पढ़ाई होती थी। हमारे अध्यापक ने हमें उर्दू की पढ़ाई याद करने के लिए कहा। हम दो लड़के उस पढ़ाई को याद करने लगे और तीसरा

लड़का दीवार पर चढ़कर बैठ गया। जब अध्यापक बाहर से आया तो उसने पूछा कि तू दीवार पर क्यों बैठा है पढ़ाई क्यों नहीं कर रहा? उस लड़के ने कहा, "मैं अपने आप पढ़ लूंगा।" अध्यापक ने डाँटकर कहा, "कान पकड़।" उस लड़के ने अध्यापक के ही कान पकड़ लिए तो अध्यापक ने उसे दो थप्पड़ मारे। इसके बाद वह स्कूल ही नहीं गया। हम जब आर्मी से छुट्टी पर आते तो वह हमसे कपड़े मांगता और कहता, "भाईयो! मैं भी आपका क्लासफेलो हूं।"

प्यारेयो! चाहे हम स्कूल में विद्या प्राप्त करते हैं या रूहानियत के स्कूल में विद्या प्राप्त करते हैं। वही समझदार है जो अध्यापक के रहते-रहते ही अपना काम पूरा कर ले।

मैं देखता रहा हूं कि महाराज सावन के नामलेवा कई प्रेमी तो महाराज कृपाल को महाराज सावन का ही स्वरूप मानते थे। कईयों के दिल में अहंकार था कि यह हमारा गुरु भाई है। महाराज कृपाल कहा करते थे, "परमात्मा का कोई गुरु भाई नहीं होता जो बनेगा वह परमात्मा ही बनेगा।" हमें कभी भी भजन का चोर नहीं बनना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

कल करन्ता अब कर, अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवई, जब सिर पर आयो काल॥

मैं आर्मी में जब सिग्नैलर का काम सीखता था। उस समय लिखने-पढ़ने का बहुत काम होता था। चाहे कितनी भी रात हो जाए मैं अपना काम खत्म करके ही सोता था। इसी तरह जब बाबा बिशनदास जी ने मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया। जब तक मैंने उसका प्रेक्टिकल नहीं कर लिया तब तक मैं पूरी तरह सोया नहीं, आराम नहीं किया। मुझे मेरे मुर्शिद ने जो कहा मैंने पहले वही किया।

गुरमेल बचपन से ही मेरे पास आता था। आप इससे पूछ लें कि जब तक मैंने परमात्मा कृपाल का दिया हुआ सबक पका नहीं लिया, मैं कहीं बाहर नहीं गया; अपने काम से गुफा में ही रहा।

*प्यारे मित्रों! मैंने अपने गुरु के **जीवनकाल** में उनसे जो खुशी ली अगर वही काम मैं उनके जाने के बाद करता तो क्या मैं उस खुशी को ले पाता? मेरे गुरु ने दया करके कहा, "शुक्र है एक तो पास हुआ।" मैंने प्यार से कहा, "मैं नहीं जानता कि मेरे कौन से जन्म के भाग्य हैं कि आप मुझे आकर मिले।" आपने भी भावुक होकर कहा, "गुरु को भी ऐसा शिष्य भाग्य से ही मिलता है।"*

*प्यारेयो! आज का काम कल पर न छोड़े। जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। सबसे पहले भजन को समय दें। मैंने अपने गुरु का हुक्म उनके **जीवनकाल** में ही माना है। मैं आपको भी यही कहता हूं कि आप भी गुरु के रहते हुए पूर्ण बनें। हम अपने शरीर को सुंदर बनाने और संवारने में जितना समय देते हैं उतना समय हमें अच्छे बनने में भी देना चाहिए। रोज-रोज काम-वासना में न लिपटें। काम को ख्यालों में लाने से हमारी आत्मा मैली होती है।*

सन्तों की जिंदगी एक मिसाल होती है। अपनी रोजी-रोटी खुद कमाकर खानी चाहिए। तन को पवित्र रखें। हमारा अन्न जितना पवित्र होगा उतना ही तन पवित्र होगा। जितना तन पवित्र होगा उतना ही हमारा मन पवित्र होगा। जब हम पवित्र तन से सिमरन करेंगे तो हमारी आत्मा पर जन्मों-जन्मों से लगी हुई मैल उतर जाएगी।

महाराज सावन ने भरी संगत में ये लफ़्ज़ कहे थे, "मैं बुर्जुग हो गया हूं अगर मैंने किसी से कुछ लेना है तो मैंने वह माफ किया और अगर किसी ने मुझसे कुछ लेना है तो वह आकर ले सकता है। मैंने संगत की कार, पेट्रोल और सब्जी इस्तेमाल की है। मैंने अपनी कमाई में से लंगर में डाला है।"

हम महाराज कृपाल की तरफ भी देखते रहे हैं। आप अपनी पेंशन से ही अपना गुजारा चलाते रहे, सन्त अपना खर्चा घटा लेते हैं। वे अपने ऊपर ज्यादा खर्च नहीं करते बल्कि अपनी आमदनी में

से किसी गरीब की मदद भी कर देते हैं। सन्तों ने अपने गुरु के दरबार में तन, मन और धन से भी बेशुमार सेवा की होती है क्योंकि धन तो गुरु के चरणों में लगाने से ही पवित्र होता है। कबीर साहब कहते हैं:

हत्थी खाइए हत्थी देईए हत्थी बन्निए पल्ले।
ऐसा कोई न जन्मया, जो मोया पिच्छों घल्ले॥

प्यारेयो! आप कल की इंतजार न करें, कोशिश करें कि गुरु के बैठे-बैठे ही पूर्ण बनें। गुरु को बहुत खुशी होती है कि मेरा कोई बच्चा मेरे **जीवनकाल** में पास तो हुआ। बहुत से प्रेमी गुरु के **जीवनकाल** में ही अपने अंदर शब्द की धारा प्रकट कर लेते हैं, गुरु के साथ एक हुए होते हैं।

✯✯✯